भोर का उजास फैलाया सावनी ने

[सांस्कृतिक संवाददाता]

जोधपुर, 15 जनवरी। मधुर स्वर की धनी युवा गायिका सावनी शेण्डे ने मंगलवार की सुबह बंदिश के विभिन्न प्रकार विस्तारपूर्वक समझाते हुए अनेक रागों में प्रभावी प्रस्तुति देकर जैसे सुबह की लालिमा को अकादमी सभा भवन में फैला दिया। रागों की गहरी समझ, सुरों की सुन्दर लयकारी और तानों-मुरकियों के मोहक प्रयोग से उन्होंने एक बार फिर सूर्यनगरी के रसिक संगीत प्रेमियों को आनन्दित किया।

राजस्थान संगीत नाटक अकादमी और स्वर सुधा के संयुक्त तत्वावधान में विख्यात गायिका वीणा सहस्त्रबुद्धे की शिष्या कोकिलकंठी और समृद्ध गायिका सावनी ने कम उम्र के बावजूद संगीत पर गहरी पकड़ दर्शायी। शास्त्रीय संगीत की व्याख्या करते हुए उन्होंने पहले शास्त्रीय व लोकसंगीत में अन्तर बताया और फिर शास्त्रीय संगीत के प्रकारों की चर्चा की। संगीत को विरासत में पाने वाली अनेक पुरस्कारों से सम्मानित और देश विदेश में गायकी की धूम मचाने वाली इस गायिका ने फिर बताया कि जो बंदिश्त रूप में गाई जाती है वही बंदिश होती है और यह तालबद्ध रचना होती है। गायक के क्रमशः विकास को बताते हुए उन्होंने कहा कि आलापचारी के बाद स्थाई, फिर पूर्वांग से उत्तरांग प्रधान, उसके बाद अंतेर पर काम और तानों की सूचना, फिर मध्यलय की बंदिश और फिर द्रुत तराना गाया जाता है।

कार्यक्रम को सार्थकता प्रदान करते हुए इस कुशल गायिका ने राग अहीर भैरव में विलम्बित स्वयं की बंदिश सुनाई 'दीप जलाओ, सजाओ मंदिरता संवारो...' इसमें मध्य लय के बोल थे 'अलबेला सजनवा आया रे...' और तराना 'तुम तनन तुम....'। सावनी ने व्याख्यान में बताया कि आकार में आलाप से एकरसता आती है इसलिए उसमें शब्दों और सामंजस्य की तथा सरगम की प्रमुख हिस्सेदारी होती है। गायकी का स्वरूप समझाते हुए सावनी ने फिर हंस ध्वनि में रूपक प्रस्तुत किया 'कैसे कैसे समझाऊं, मनाऊं, अपने सांवरे पिया को...'। इसके बाद गायिका ने रागों की गंभीर व चंचल प्रकृति में अंतर बताते हुए कहा कि चंचल प्रकृति की राग में लम्बी तानें पुनरावृति के कारण ज्यादा प्रभावी नहीं होती। आलापचारी को ज्यादा महत्वपूर्ण मानने वाली और सृजनात्मक लयकारी करने वाली इस गायिका ने फिर उत्तरांग प्रधान राग सोहनी को ऊपर के सुरों के आरंभ कर 'ओ नंदलाला, मिलता है यथा बसन्त, शंकरा आदि। राग शंकरा में 'डमरू डम डम बाजे...' और बसन्त में काशीनाथ बोडस की बंदिश 'मधुबन आज बसन्त...' सुनाकर वातावरण को उसीके अनुरूप बनाया। रचनाकारों के नामों से जुड़ी बंदिशों की जानकारी देते हुए फिर इस सुमधुर गायिका ने राग जोग में फैयाज रंग द्वारा तैयार बंदिश सुनाई 'साजन मोरे घर आए...'। अपनी दादी से संगीत की आरम्भिक शिक्षा तथा पिता से ठुमरी, दादरा आदि का प्रशिक्षण लेने वाली इस गायिका ने फिर देवगंधार राग के बारे में बताते हुए कहा कि राग जौनपुरी में शुद्ध गंधार से राग देवंगधार बनता है। इस राग में निबद्ध रामाश्रय झा की रचना को फिर उन्होंने प्रस्तुत किया 'बालम हरजाई जावो तुम जावो बनाओ बात...'। सावनी ने कहा कि बंदिश स्वर प्रधान गायकी होती है। शब्द प्रधान नहीं इसलिए इसमें गंभीर साहित्य नहीं मिलता। अंत में उन्होंने अपनी स्वरचित बंदिशें राग मारू विहाग और राग मिश्र भैरवी में सुनाई। तबले पर अरुण गवले ने तथा तानपुरे पर इन्द्रजीत छंगाणी ने संगत की और संचालन अनुराधा अडवाणी ने किया।